राहुल गांधी का सिद्धांत सही–तथ्य गलत

अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

श्री राहुल गांधी ने सही कहा है। राजनैतिक दल किसी व्यक्ति पर केन्द्रित नहीं हो सकते। राजनैतिक दलों का एक ढांचा होना चाहिए, एक विचारधारा होनी चाहिए और पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र होना चाहिए। उन्हें किसी व्यक्ति की मरजी से नहीं चलाया जा सकता। अब हम अब इस बात का विष्लेशण करने की कोशिश कर रहे होंगे कि भारत में अनेक राजनैतिक दलों के साथ ऐसा क्या हुआ कि वे अव्यवस्थित हो गए और व्यक्ति पर केन्द्रित हो गए।

पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु में करिश्मा था। 1950 में कांग्रेस ने अपनी पहचान उनके साथ जोड़नी शुरु कर दी। इसके कारण बड़ी संख्या में ऐसे नेता हाषिये पर चले गए जो उनसे सहमत नहीं थे। जब उन्होंने 1950 के दषक में श्रीमती इन्दिरा गांधी को एआईसीसी का अध्यक्ष बनाया, वह इस बात का प्रमाण था कि कांग्रेस में राजवंषीय षासन की षुरुआत हो चुकी है। प्रधानमंत्री की पुत्री को पार्टी का अध्यक्ष बनाने के लिए अनेक वरिश्ठ नेताओं की उपेक्षा की गई।

श्रीमती इंदिरा गांधी का व्यक्तित्व उनकी राजनीति पर हावी रहा। इसके कारण 1969 में कांग्रेस का विभाजन हो गया। 1973 में भारत की न्याय व्यवस्था को कम करके आंकने की उनकी कोषिष कांग्रेस की विचारधारा का हिस्सा बन गई। 1975 में जब आपात स्थिति लागू की गई, निरंकुषता कांग्रेस की विचारधारा बन गई। संस्थागत विनाष को स्वीकृति मिल गई क्योंकि विपक्ष, संसद, मीडिया और न्याय पालिका को उनकी जगह बता दी गई। एआईसीसी अध्यक्ष ने ''इंडिया इज इंदिरा और इंदिरा इज इंडिया (भारत इंदिरा है और इंदिरा भारत है)'' को पार्टी का नारा बना दिया। आपात स्थिति के दौरान घोशित आर्थिक कार्यक्रमों के जरिये एक नियंत्रित अर्थव्यवस्था के लिए प्रतिबद्धता कांग्रेस पार्टी का सिद्धांत बन गई।

1984 में ऑपरेषन ब्लू स्टार के जरिये सिख विरोधी भावनाएं उत्पन्न हुई। किसी समुदाय के नरसंहार को उचित ठहराना पार्टी के कार्यक्रम का का हिस्सा बन चुका था। षुरु में राजीव गांधी ऐसा दिखावा करते थे जैसे उन्होंने अतीत से नाता तोड़ लिया है। लेकिन 1987 तक घोटालों का बचाव करना और उन्हें छिपाना पार्टी की प्रतिज्ञा का हिस्सा बन गया। जब वरिश्ठ नेतृत्व श्री वी पी सिंह के पुत्र को झूठे सेंट किट्स मामले में फंसाने की कोषिष कर रहा था पूरी पार्टी मनगढंत कहानी गढ़ने के लिए खड़ी हो गई। पार्टी की व्यक्ति पर केन्द्रित राजनीति का इससे अच्छा सबूत और क्या होगा?

जब श्रीमती सोनिया गांधी ने राजनीति में प्रवेष किया, पार्टी ने इस सिद्धांत को स्वीकार किया कि विदेषी मूल का कोई व्यक्ति भारत का प्रधानमंत्री हो सकता है। उन्होंने आखिरकार इस पद को स्वीकार नहीं करने का फैसला किया। अस्वीकार करने की नैतिकता का गाना पार्टी गा रही है। श्री राहुल गांधी का अपनी 'नॉन सैन्स' टिप्पणी के सहारे केन्द्रीय मंत्रिमंडल के विरुद्ध निर्णय करने का फैसला इस बात का संकेत है कि व्यक्ति पार्टी से बड़ा है। भाजपा या वामपंथियों जैसी संगठित पार्टी में, श्री राहुल गांधी पार्टी संगठन अथवा किसी नियामक ढांचे में एक पदाधिकारी के रुप में अपने पहले नियत कार्य के लिए संघर्श कर रहे होते। यह परिवार के प्रभुत्व वाली व्यवस्था में ही संभव है कि वह अविवादित षीर्श पद पर हैं।

व्यक्ति संप्रदाय से कांग्रेस के दो प्रधानमंत्री बाहर रहे। श्री लाल बहादुर षास्त्री बहुत थोड़े समय प्रधानमंत्री रहे। उनकी सादगी और उच्च विष्वसनीयता ने पूरे देष को प्रेरणा दी। उनकी अच्छाई कांग्रेस की विरासत का हिस्सा नहीं रहे। कुछ विफलताओं के बावजूद श्री पी वी नरसिंह राव का एक ऐसे नेता के रुप में इतिहास में नाम है जिसने भारत की अर्थव्यवस्था और विदेष नीति को बदल दिया। वह कभी भी कांग्रेस पार्टी के इष्तहारों में दिखाई नहीं दिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री नरेन्द्र मोदी जैसे लोकप्रिय नेता होने के कारण भाजपा व्यक्ति पर केन्द्रित नहीं है। ये नेता हमेषा सक पार्टी संगठन का विशय रहे हैं और हमेषा रहेंगे। उनका यह कहना गलत है कि वे (श्री राहुल गांधी) व्यक्ति पर केन्द्रित पार्टी के खिलाफ हैं।